प्रतिध्वनि कला
संस्कृति की

ISSN 2349 - 137X
UGC CARE-listed, Peer Reviewed Journal

# अनहद लोक

वर्ष–10, अंक – 19, 2024
(जनवरी–जून)

ISSN 2349-137X
UGC CARE-Listed Peer Reviewed

# अनहद लोक

**( प्रतिध्वनि कला एवं संस्कृति की )**

वर्ष-10, अंक-19, 2024
(जनवरी - जून)
(अर्धवार्षिक शोध पत्रिका)

सम्पादक

**डॉ० मधु रानी शुक्ला**

सम्पादक मण्डल

**डॉ० राजश्री रामकृष्ण, डॉ० मनीष कुमार मिश्रा,**
**डॉ० धनंजय चोपड़ा, डॉ० ज्योति सिन्हा**

सह सम्पादक

**सुश्री शाम्भवी शुक्ला**

**व्यंजना**
आर्ट एण्ड कल्चर सोसाइटी
109 डी/4, अबुबकरपुर, प्रीतम नगर, सुलेम सरांय
प्रयागराज - 211011

# अनहद लोक

**( प्रतिध्वनि कला एवं संस्कृति की )**

सम्पादक : डॉ॰ मधु रानी शुक्ला
सम्पादक मण्डल : डॉ॰ राजश्री रामकृष्ण, डॉ॰ मनीष कुमार मिश्रा, डॉ॰ धनंजय चोपड़ा, डॉ॰ ज्योति सिन्हा
सहायक सम्पादक : सुश्री शाम्भवी शुक्ला
मल्टीमीडिया सम्पादक : श्रेयस शुक्ला

प्रकाशक एवं वितरक :
व्यंजना (आर्ट एण्ड कल्चर सोसाइटी)
109 डी/4, अबुबकरपुर, प्रीतम नगर
सुलेम सरांय, प्रयागराज - 211 001
मो॰ : 9838963188, 8419085095
ई-मेल : anhadlok.vyanjana@gmail.com
वेबसाइट : vyanjanasociety.com/anhad_lok

मूल्य : 300/- प्रति अंक, पोस्टल चार्जेज अलग से
सदस्यता शुल्क
वार्षिक : 700/-
तीन वर्ष : 2,100/-
आजीवन : 15,000/-

**संगीत नाटक अकादेमी के सहयोग से प्रकाशित**

© सर्वाधिकार सुरक्षित
- रचनाकारों के विचार मौलिक हैं
- समस्त न्यायिक विवाद क्षेत्र इलाहाबाद न्यायालय होगा।

मुद्रक :
**गोयल प्रिन्टर्स**
73 A, गाड़ीवान टोला, प्रयागराज
फोन - 0532-2655513

**मार्गदर्शन बोर्ड :**

डॉ॰ सोनल मानसिंह, पं॰ विश्वमोहन भट्ट, प्रो॰ ऋत्विक् सान्याल, प्रो॰ चित्तरंजन ज्योतिषि, पं॰ रोनू मजुमदार, पं॰ विजय शंकर मिश्र, प्रो॰ दीप्ति ओमचारी भल्ला, प्रो॰ के॰ शशि कुमार, प्रो॰ (डॉ॰) गुरप्रीत कौर, डॉ॰ राजेश मिश्रा

**सहयोगी मण्डल :**

प्रो॰ संगीता पंडित, प्रो॰ लावण्य कीर्ति सिंह 'काब्या', प्रो॰ निशा झा, प्रो॰ प्रभा भारद्वाज, प्रो॰ अर्चना अंभोरे, डॉ॰ राम शंकर, डॉ॰ इंदु शर्मा, डॉ॰ सुरेन्द्र कुमार, प्रो॰ भावना ग्रोवर, डॉ॰ स्नेहाशीष दास, डॉ॰ शान्ति महेश, डॉ॰ कल्पना दुबे, डॉ॰ बिन्दु के॰, डॉ॰ अभिसारिका प्रजापति, डॉ॰ पारुल पुरोहित वत्स, डॉ॰ मिठाई लाल

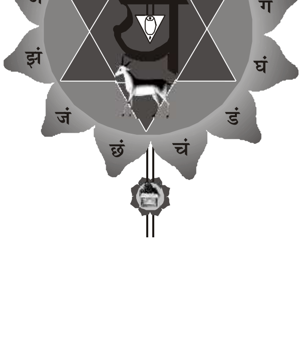

# सम्पादकीय

'अनहद लोक' अंक-19, आप सभी के शुभ हाथों में सौंपते हुए अपार हर्ष एवं संतुष्टि का अनुभव हो रहा है। आप सभी की सकारात्मक प्रतिक्रियाओं से हमें निश्चित रूप से बल मिला है तथा निष्ठा व लगनपूर्वक कार्य करने की प्रेरणा मिलती है।

भारतीय संगीत के आधार तत्वों पर जब हम विंहगम दृष्टि डालते हैं तो व्यक्तिनिष्ठ रागाधारित या Melody युक्त संगीत की प्रधानता दृष्टिगत होती है, नाट्यशास्त्र के 'जाति गायन' से प्रारम्भ विकास क्रम की श्रृंखला में राग गायन का जो रूप दिखता है उसमें स्वरों की माधुर्यपूर्वक क्रमबद्ध गतिशीलता ही परिलक्षित होती है, ऐसे में 'वृन्द' की परिकल्पना असम्भव सी प्रतीत होती है किन्तु अनादि अपौरूषेय अमूर्त कला के रूप में प्रतिष्ठित अध्यात्म तथा दर्शन से पोषित भारतीय संगीत का उद्गम स्थल 'सामवेद' के पाठ्य तथा गान प्रक्रिया में वृन्दगान या वादन के बीज का आरोपण दृष्टिगत होता है स्तोत्रो के पाठ्य या गान के अवयव हिंकार, प्रस्ताव, उद्गीथ, प्रतिहार, निधन, ऊँकार आदि का गायन ऋषियों द्वारा व्यवस्थित क्रम में गाने की प्रथा थी। वैदिक साक्ष्यों से तत्कालीन वैदिक तथा लौकिक संगीत में सामाजिक कृत्या के साथ ही ईश्वरोपासना की सामूहिक प्रक्रिया का वर्णन प्राप्त होता है वेद हमारी संस्कृति के सशक्त हस्ताक्षर हैं, अतः वैदिक परम्परा की गान प्रक्रिया में सामूहिक ईश्वरोपासना व्यक्त करती है कि हम प्रगतिशील विचारधारा को अपनाते हुए भी सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय के निमित्त सामूहिक प्रार्थना करते रहें, हमने जड़-चेतन, प्रकृति, सूर्य-चन्द्र, पंचमहाभूत तत्वों की उपासना में सदा ही सामूहिकता पर बल दिया यद्यपि वहाँ हेतु संगीत की प्रस्तुति का न होकर सुरमय मार्ग से ईश्वरोपासना का रहा क्योंकि 'मदभक्ता यत्र गायन्ती तत्र तिष्ठामि नारदः' ने भारतीय चिन्तन को स्वरमय स्वरूप प्रदान किया है, अतः ईश्वरोपासना की स्वरमयी प्रक्रिया में स्वर-सौजन्य, स्वरभेद, लय-वैशिष्ट्य, ध्वनिभेद (Voice Modulation) से समन्वित गान ने व्यष्टि रूप (Melody) के साथ ही समष्टि (Harmony) रूप ने वृन्दगान की आधारशिला रखी। वैदिककालीन 'लोक' में भी सामूहिक गीत तथा नृत्य का वर्णन प्राप्त होता है साथ ही स्त्री पुरूष के पृथक-पृथक 'वृन्द' की चर्चा प्राप्त होती है।

वृन्द के गुणों के रूप में माना गया है :

**मिलित्वा बहुभिर्यस्तु गीतं गायति गायनः।**
**स वृन्दगायन स्तेषां पूर्वः पूर्वो भवेद् परः॥**

अर्थात् मिलकर गाने वाले गायको के समूह को 'वृन्द' कहा गया। वृन्द के गुणों की व्याख्या करते हुए लिखा है :

**मुख्यानु वृयिर्मिलनं ताललीनानुवर्तनम्।**
**मिथस्त्रृटितानिर्वाह स्त्रिथानव्याप्ति शक्तिताः।**
**शब्द सादृश्यभित्येते प्रोक्ता वृन्दस्य षडगुण।।**

मुख्य गायक की अनुवृत्ति अर्थात स्वर, ताल, पद सभी का अनुसरण परस्पर त्रुटियों को निभा लेना तीनों स्थानो में कण्ठ की पहुँच समान कण्ठ गुण आदि वृन्द के गुण हैं।

मन्दिरों की परम्परा शंख, घड़ियाल, झांझ, मृदंग, ढोल, ताल, मंजीरे, करताल, मुरज, नागस्वरम्, वीणा तथा विभिन्न ध्वनियों वाली घण्टियों का प्रयोग होता था। कालिदास के ग्रन्थों में भी वीणा, मुरली तथा मृदंग वादन की सामूहिक प्रथा, वृन्द वादन के आधार रूप का संकेत देती हैं। प्राचीन वृन्दवादन तत्कालीन रंगभूमी का एक अविभाज्य अंग था, आज यह स्वतंत्र विधा के रूप में प्रतिष्ठित है किन्तु प्राचीनकाल से ही इसमें न्यूनाधिक परिवर्तन से साक्ष्य प्राप्त होते हैं। नाट्यशास्त्र में महर्षि 'भरत' ने वृन्द विशेष को कुतप की संज्ञा प्रदान की है।

'कुतप' तत्, अवनद्ध तथा नाट्य तीन विभागों में वर्गीकृत था।

**प्रयोंगस्त्रविधो ह्येवां विज्ञेयो नाट्याश्रयः।**
**त्तश्चैवावनदद्धश्च तथा नाट्यकृताऽपरः।।**

तत् प्रयोग का अर्थ है नाटक की कथा से असम्बद्ध तत् वाद्यों का मानव कण्ठ के साथ स्वतंत्र प्रयोग, इसी प्रकार अवनद्ध प्रयोग है। तत् और अवनद्ध वाद्यों का अभिनय पोषक और नाटक के पात्र के अनुकूल प्रयोग नाट्यकृत प्रधान कहा जाता है।

तत् कुतप :- **तते कुतप विन्यासो गायनः सपरिग्रहः।**
**वेवस्थिको वैणिकश्चं वंशवाद स्तथैव चः।।**

'तत् कुतप' विन्यास में गायक अपने सहयोगियों सहित वैपचिंक, वैणिक तथा वांशिक होते हैं। 18 प्रकार की वीणाओं के साथ शंख, पाणिक, पाव, काहल, मुहरी तथा श्रृंगी वाद्यों के साथ वादक अपनी पत्नी सहित सहायक गायकों से युक्त प्रधान गायक तथा उत्तम ताल धारियों से युक्त बताया गया है। 'गायक वृन्द' प्रधान गायक को सहायता देता है, उसी प्रकार 'मत्तकोकिला वादक' वांशिक-वैणिक को सहायता देता है।

अवनद्ध कुतप :- **मार्दगिंक पाणविक स्थता दार्दरिकोऽपरः।**
**अवनद्वविधावेष कुतपः समुदाहतः।।**

मृदंग वादक, पणव वादक तथा दुर्दुर वादक के साथ अवनद्ध कुतप होता है। पणव, हुडुक्क आधार का तंत्रीयुक्त वाद्य होता है तथा महाघट के आकार का दुर्दुर वाद्य होता है, झांझ, मंजीर इत्यादि वाद्यों को भी अवनद्ध कुतप के अन्तर्गत समाहित किया गया है। प्रस्तुति में मृदंग वादक श्रेष्ठ तथा अन्य उसकी सहायता के लिए होते हैं। पणव, दुर्दुर, भण्डि, हक्का, पटह, डक्कुली, करटा, ढक्का, ढवस, घडस, हुडुक्का, डमरू, रन्जजा, कुडुवा, निवाण, त्रिवली, भेरी, तुम्बकी, बोम्बडी, पट्ट पर कर्मा, भल्लरी, माशा, सेल्लुक, जयघण्टा, कॉस्य, ताल घण्टा, किरिकिट्टक, आदि वाद्य होते थे।

नाट्य कुतपः- नाट्य कुतप विभिन्न देशीय अभिनय तथा नृत्यकला से सिद्धहस्त पण्डितों से युक्त है।

**उत्तमाधममध्याभिस्तथा प्रकृतिभियुतः।**
**कुतपो नाट्ययोगे तु नानादेशसमुदभवः।।**

उत्तम, मध्यम और अधम कोटि के पात्रों से युक्त विभिन्न देशों से उत्पन्न 'कुतप' नाट्य में प्रयुक्त होता है।

विभिन्न देशों में प्रचलित सम्प्रदाय के स्तर भेद से नाट्य कुतप के उत्तम, मध्यम व अधम तीन भेद हुए जो कि अपनी-अपनी कोटि के सम्प्रदाय से दीक्षित हुए। नाट्य वस्तु के अभिनय में नाट्यकृत कुतप का ही प्रयोग होता है, तत् अवनद्ध कुतप का नहीं। वस्तुतः कुतप की चर्चा 'महर्षि भरत' ने नाट्य के अन्तर्गत की है। अतः अन्ततः 'भरत' ने निर्देशित किया है कि गान वादन तथा नाट्य भिन्न-भिन्न व्यक्तियों पर आश्रित होने के बाद भी नाट्य आयोजक, निर्देशक ह्रदय से स्नेह एकाएक कर प्रयुक्त करें तभी नाट्य अखण्ड आन्नददायी होगा।

**एवं गानं च वाद्यं च नाट्य च विविधाश्रयम्।**
**अलात चक्र प्रतिमं कर्यव्यं नाटययोत्त्रभिः।।**

बाणभट्ट ने 'हर्षचरित' में शंख, वीणा, ढोल आदि के सम्मिलित वादन की चर्चा की है।

आइने अकबरी में अबुफ़जल ने 'कुतप' को नौबत की संज्ञा प्रदान की है, जिसमें दमामा, नक्कारा, ढोल, कर्ना, सूर्ना, नफीरी, सींग तथा झांझ इन नौ वाद्ययंत्रों का वादन करने की प्रथा थी। मुरसली और वरदास्त दो धुने वृन्द द्वारा प्रस्तुत होती थीं। इस्रनाती, सिराजी, कलन्दरी, निगार कतर या नुखुद कतर इन धुनों के वादन लम्बी अवधि के होते थे। ख्वारीजामित नामक धुन भी बजायी जाती थी। कहा जाता है कि अकबर ने स्वयं दो सौ से अधिक रचनाएँ की थीं, जिसमें जलालशाही, महमौर, करकत और नवरोजी विशेष रूप से सुन्दर और मनोरंजक रचनाएँ थीं। पाणिनी काल के वाद्यों की 'तूर्य समूह' की संज्ञा थी तथा इसमें भाग लेने वालों को 'तुर्यांग' कहा जाता है।

प्रथम शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हेन राज्य के अन्तर्गत तीन प्रकार के वृन्दों का उल्लेख प्राप्त होता है, प्रथम धार्मिक अवसर पर, द्वितीय फौज में और तृतीय भोज समारोह तथा अन्तःपुर के लिए था।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो चीन में 518 ई० में सात वृन्द समूहों द्वारा प्रस्तुत संगीत का उल्लेख कट्साद ने अपनी पुस्तक दि राईज ऑफ म्यूजिक इन द ऐनशियन्ट वर्ल्ड ईस्ट एण्ड वेस्ट (The Rise of Music in The Ancient World East and West) में किया है, जिसमें एक आर्केस्ट्रा भारत का भी था। आर्केस्ट्रा शब्द का प्रयोग यद्यपि सत्रहवीं शताब्दी में प्रारम्भ हो चुका था और अठाहरवीं शताब्दी में यह संतुलित समूह वाद्य वृन्द के रूप में मान्य हो चुका था, इसमें वाद्यकार, अर्धगोलाकार घेरे में वाद्य वादन तथा नृत्य करते थे। पाश्चात्य संगीत में आर्केस्ट्रा का इतिहास अधिक प्राचीन नहीं माना गया है। प्रख्यात संगीतज्ञ बाख के युग में भी वाद्य वृन्द मान्य ही था। यद्यपि वाद्यों के ध्वनि संयोजन संतुलन पर यथेष्ट ध्यान दिया जाने लगा था।

उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में व्यवस्थित क्रम में आर्केस्ट्रा प्रस्तुत होने लगा, इसी काल में बिथोवेन की प्रथम सिम्फ़नी प्रस्तुत हुई जो कि परवर्ती संगीतकारों के लिए आर्केस्ट्रा की परंपरा के आधारभूत तत्व के रूप में स्थापित हुई, आधुनिक से आधुनिक रचनाएँ भी उसी परंपरा का विस्तार है। बिथोवेन की सिम्फ़नी में

वॉयलिन, चेलो, वायला, डबलहार्न, वंशी, ओबोए, क्लैरोनेट, ट्रम्पेट तथा घन वाद्यों का प्रयोग था जो कि हेडिन और मोज़ार्ट के क्लासिकल संयोजन से बहुत भिन्न नहीं था।

कालान्तर में 72 वादकों के साथ लंदन में फिलहामोर्निया वाद्यवृन्द की प्रस्तुति ने एक नवीन संख्या निर्धारित कर दी, आज तो यह संख्या बढ़कर 100 तक पहुँच गयी है, यह एक सम्पूर्ण पद्धति की विकास यात्रा है। कालान्तर में जुबिन महता जैसे कलाकारों ने बहुत बड़ी संख्या में कलाकारों के साथ वृन्द वादन किया।

भारतीय संगीत 'राग' प्रधान है, रंगमंच तथा सिनेमा के प्रभाव से इसे गतिशीलता प्राप्त हुई यद्यपि यह संगीत वर्णशंकर था किन्तु उसने तत्कालिक उद्देश्य को अवश्य पूरा किया। भौतिक, औद्योगिक तथा सामाजिक क्रान्तियों के फलस्वरूप पश्चिम देशों में हार्मोनी पर निर्भर आर्केस्ट्रा ने भारतीय वृन्द संगीत पर भी अपना रंग डाला। भारतीय पुलिस तथा सेना के बैण्ड ने वृन्दीकरण के इस प्रयत्न को सफलता प्रदान की।

भारतीय संगीत में तकनीकी दृष्टि में आर्केस्ट्रा चार भागो में बाँटा जा सकता है :

1) शास्त्रीय जो राग रूप के अनुसार निर्मित था।

2) उप-शास्त्रीय जो संकीर्ण रागों से मधुर रचनाएँ निर्मित हुईं

3) लोक धुनों के आधार पर।

4) विशेष स्थिती परक।

यद्यपि भारतीय संगीत की आत्मा को बनायें रखते हुए निर्माण दुष्कर कार्य है तथापि अनेक सुमधुर रचनाओं का निर्माण हुआ है जिनमें कुछ में भारतीय के साथ ही पाश्चात्य संगीत के तत्वों का भी समावेश देखा गया है।

आर्केस्ट्रा को विभिन्न वाद्यों द्वारा सांधिक वादन है, ये दो प्रकार से हो सकता है- प्रथम सर्धवादक तो अपने प्रमुख का साथ देते हैं या बीच-बीच की स्वर मालिकाएँ पुनः दोहरातें हैं। दूसरे के अनुसार विभिन्न वाद्यों की प्रकृति, गुणधर्म तथा विशेषताओं के अनुसार समन्वित रूप से वादन नहीं कर सकता अपितु लिपि इशारे से दिखाता है। पश्चिम में निर्देशक का स्वर रचयिता होना आवश्यक नहीं है किन्तु भारतीय प्रणाली में निर्देशक ही रचयिता होता है।

वाद्य वृन्द के प्रथम भाग को आड़-लिपि कहते हैं जिस पर समस्त सौन्दर्य विद्यमान रहता है, वाद्य वृन्द में निहित सम्पूर्ण भावना की समृद्धि में 'प्रवेशक' आधार स्तम्भ होता है इन्हीं आधार तत्वों पर अनेक रचनाएँ प्राप्त होती हैं।

आधुनिक भारत में विगत सौ वर्ष पूर्व 'आर्केस्ट्रा' सर्वप्रथम बंगाल के जात्रा दल में तीस से साठ वादक तक होने से प्रारम्भ हुआ, हाबुदत्त स्वामी और दक्षिणा बाबु इसके प्रवर्तक थे, कालान्तर में बड़ौदा के मौलाबख्श जी ने वृन्दवादन में नए प्रयोगों को स्थापित किया साथ ही मैसूर तथा बम्बई में भी इसका व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ। संगीतिका ओपेरा की चर्चा यहाँ पर आसामायिक न होगी, 'संगीतिका' हमारी प्राचीन संस्कृति की अनुपम देन है, उत्तर प्रदेश की 'नौटंकी' तथा जात्रा में अल्प मात्रा में इसके बीज पाये गये जिनकी व्याप्ति तथा स्वरूप अद्भुत है।

भारतीय संगीत में अन्य विधाओं की अपेक्षा वृन्द या आर्केस्ट्रा अभी अपनी शैशवावस्था में है। कुछ विदेशी संगीतज्ञों ने भारतीय शास्त्रीय संगीत के आधार पर वृन्द संरचना की, 'वाल्टर कॉफ़ मैन' ने छः तथा नौ रागों से युक्त भारतीय तथा पश्चिमी वाद्यों के सम्मिश्रण से आकर्षक रचनाओं का निर्माण किया। 'मात्यास सीवर' नामक लंदन निवासी हिंगेरियन संगीतकार ने अपने वृन्द का संयोजन किया राग मोहनम् में, 'विलियम ऐल्विन' ने राग नलिन क्रांन्ति में, 'ह्यूबर्ट विलफोर्ट' ने राग बिलहारी की एक स्वर जाति का प्रयोग किया। 'बेंजामिन फ्रेंकलिन' की 11 मात्राओं की ताल पर उत्कृष्ट कल्पना सृष्टि है, भारतीय संगीत के गांभीर्य और वाद्य वृन्दों के अनुपम सामंजस्य से उद्देश्यपरक तत्वों को ध्यान में रखते हुए जिन भारतीय संगीतज्ञों ने जीवन्त सृष्टि की उसमें सर्वाधिक श्रेय मैहर के बाबा अल्लाउद्दीन ख़ाँ साहब को जाता है, जिन्होंने वृन्द को समूह करने हेतु 'तरंग सारंगी' आदि वाद्यों का निर्माण किया।

इसके साथ ही पं॰ रविशंकर, तिमिर बरन, विष्णुदास शिराली, टी के जायराम, अय्यर आदि ने अपनी कृतियों में परम्परा के साथ नवीन सृजनात्मक क्षमता का परिचय देते हुए अमूल्य रचनाएँ संगीत जगत को प्रदान की हैं, जिन्हें वॉयलिन, सारंगी, वायला, चेलो, मंदरबहार, डबल बॉस के साथ ही सुषिर तथा घन वाद्यों के सम्मिश्रण से तैयार किया गया।

इन रचनाओं में माधुर्य, रस, भाव, लय, ताल, काकु, क्रमबद्धता का विशेष ध्यान दिया गया है, जो कि आने वाली पीढ़ी के लिए निश्चित रूप से दिशा निर्देश प्रदान करती है। यद्यपि वृन्द या आर्केस्ट्रा की अनेक रचनाएँ हो चुकी हैं किन्तु प्रयोग की अपार सम्भावनाएँ आज भी हैं।

कुतप, वृन्द तथा आर्केस्ट्रा से प्रभावित शास्त्रों, कलाओं, साहित्य, तत्व तथा तथ्यों की सांगीतिक हार्मनी, रागात्मक स्वरूप में पूर्णता प्रदान करती हुए इस अंक के रूप में सृजित हुई है। यह अंक निश्चित रूप से आप सभी के लिए लाभकारी हो, त्रुटियों के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ। मैं समस्त लेखकों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने सारगर्भित लेख प्रदान किए, जो आने वाली पीढ़ी के लिए संग्रहणीय होगा।

**डॉ॰ मधु रानी शुक्ला**

# अनुक्रम

## गान


| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | संगीत में सात स्वरों का दार्शनिक विवेचन | *डॉ. संगीता घोष* | 3 |
| 2. | उपशास्त्रीय संगीत में बंदिश का स्वरूप | *डॉ. अंजू सूर्यभान फुलझेले* | 9 |
| 3. | हिन्दुस्तानी क़व्वाली की सांगीतिक संरचना एवं अन्य विधाओं का समावेश | *डॉ. वैभव कैथवास* | 15 |
| 4. | रागदारी संगीत में आलाप | *नीतू तिवारी* | 20 |
| 5. | उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में आधारभूत सांगीतिक सिद्धांतों की भूमिका : शास्त्र पक्ष के संदर्भ में | *सौम्या जायसवाल*<br>*डॉ. अंजलि शर्मा* | 25 |


## अतोद्य


| | | | |
|---|---|---|---|
| 6. | Percussion Artists in the Musical Landscape of Sikkim | *Keshav Tolangi Sarki*<br>*Dr. Samidha Vedabala* | 35 |
| 7. | Intonation of the Mountains : Divulging the Euphonious Heterogeneity of Nagaland's Aboriginal Instruments | *Shomi Verma* | 42 |


## नर्तन


| | | | |
|---|---|---|---|
| 8. | कत्थक नृत्य में प्रयुक्त संयुक्त हस्त-मुद्राएँ | *काजल कुमारी* | 49 |
| 9. | Unique Kathak Compositions of Pt. Narayan Prasad | *Mugdha D'souza*<br>*Dr. Nandkishore Kapote* | 54 |
| 10. | संगीत और नृत्य की उत्पत्ति में चारणों की भूमिका | *अक्षोभ्य भारद्वाज*<br>*डॉ. रीटा टेलर* | 59 |


## थाती


| | | | |
|---|---|---|---|
| 11. | Social Representation and Visibility in the Rise of Female Singers from Sikkim and Darjeeling District | *Dr. Krishnendu Dutta*<br>*Dr. Priyanka Howladar*<br>*Remanti Rai* | 67 |

12. The Spiritual Essence of Jagoi-Ras — *Dr. Laimayum Subhadra Devi* — 74

13. गद्दी जनजाति के लोक नृत्य : एक अवलोकन — *डॉ. मलकीयत सिंह, आकाश पांडे* — 80

14. Karam Festival : Turning to be a State Festival of the Tribal's of Jharkhand — *Dr. Rajesh Ekka* — 86

15. The Shiva-Shakti Folklore from The Northeast Region of India — *Dr. Saroj Bala* — 92

16. Analysis of Rasa (Aesthetic essence) in *Ankia Naat* of Assam — *Dr. Gakul Kumar Das* — 98

17. A brief study on the ritualistic song of the Rajbanshis : The Kaati songs — *Dr. Krishnendu Dutta, Dr. Priyanka Howladar, Jaba Barman* — 105

18. लोकराग के विविध रंग : रेणु के रिपोर्ताज — *डॉ. अम्बरीन आफ़ताब* — 111

19. चिक्कमेला या लघु यक्षगान — *डॉ. ज्योति ज्ञानेश्वरी* — 117

20. भोजपुरी लोकगीतों में रसाभिव्यक्ति — *डॉ॰ स्वाति शर्मा, प्रतिभा कुमारी* — 120

21. Resistance to Industrialisation Through Rural Folk Songs in India : An Analysis of Goreti Venkanna's *Palle Kanneru Pedutundo* — *Ranga. R., Dr. Poonam* — 128

22. Moral Development and Economic Empowerment : The Impact of Manipuri *Rās Līlā* — *Seram Rajeshwaran Singh, Dr. Laimayum Subhadra Devi* — 132

23. Songs of Lamentation and Mourning: An Eagle's Eye Perspective on Elegy (Oppari Songs) of Tamil Nadu and its cultural significance — *G. Akil Raj, Dr. Anderleen Diana Lazarus* — 136

24. लद्दाख में बौद्ध धर्म का प्रादुभार्व : धार्मिक अनुष्ठान एवं पर्वोत्सव — *नितिश कुमार* — 141

25. The Essence of Manipuri Basantaraas Dance — *Nirina Yambem, M. Macha Chaorei Kanba* — 147

26. Echoes of Tradition : Cultural Sensitivity in Preserving Tamil Linguistic Minorities' Folklore and Song Heritage — *Sruthi S.* — 152

27. लाईहराओबा — *निर्देश कुमार* — 157

28. Spirits of Assam : Exploring Assamese Demonic Folklore — *Leena Rajak, Dr. Sangeeta Chauhan* — 161

29. Cultural, Ecological and Feminist Manifestations in *Sanja Geet* — *Miti Sharma*, *Dr. B. K. Anjana* — 168

30. Understanding Garia as Signs of Puberty in the Borok Culture of Tripura — *Rati Mohan Tripura*, *Prof. Somdev Banik* — 173

31. किन्नौर जनपद के त्यौहार एवं उत्सवों में देवी-देवताओं का महात्म्य — *दीपमाला*, *डॉ. प्रीति सिंह* — 178

## सामायिकी

32. Art and Theatre as Catalysts of Change : Tracing the Journey of Modernization in Indian Society — *Dr. Y. Chakradhara Singh*, *Mr. Priyan.K.M*, *Ms. Kalitoli K Chishi* — 185

33. फ्यूज़न और शास्त्रीय संगीत — *डॉ. वेणु वनिता* — 191

34. राग समय सिद्धांत का नव-आधुनिक उपयोजन — *डॉ. गिरीश प्रेमलाल चंद्रिकापुरे* — 198

35. A Scenario of the Evolution of Hindustani Music in Karnataka — *Dr. Shivakumar M* — 204

36. भारतीय शास्त्रीय संगीत के शैक्षणिक पक्ष के संवर्धन में शैक्षिक संचार संकाय की भूमिका का अवलोकन — *डॉ॰ गुरप्रीत सिंह* — 212

37. Values of Nature in Indian Classical Music : An Analytical Study — *Dr. Alok Acharjee* — 219

38. Film as a Site of Memory: An Analysis of Rajeev Ravi's *Thuramukham* — *Muhammed Rafeek K. P.*, *Dr. M. Richard Robert Raa* — 223

39. Shattered Barriers : Unveiling the Glass Ceiling in Local Media — *Neha Sinha*, *Dr. Santosh Kumar* — 227

40. आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना एवं स्वास्थ्य संचार : उत्तर प्रदेश और झारखंड राज्य के विशेष संदर्भ में — *विवेक कुमार*, *शशांक कुमार द्विवेदी* — 234

41. Superstition and Science : An Analysis of the Film 'Bhool Bhulaiyaa' — *Jyotsana Sinha* — 241

42. Exploring the multidimensional landscape of North Indian Classical Music : An analysis of its Relevant Research areas and Methodology — *Nibedita Shyam*, *Prof. Dr. Sangeeta Pandit* — 246

43. Analysing the Role of Songs in Bollywood Horror Films — *Virginia Kashyap*, *Dr. Prachand Nayan Piraji* — 254

44. संगीत के उन्नायक : ध्वनि अभियंता की भूमिका (संगीत को संवर्धित करने के संदर्भ में) — *नेहा चौहान* 259

45. Queer Resonance : Exploring Indian Themes in the Global Black Metal Music Scene — *P. Aditiya Mizan* 264


## साहित्यिकी

46. पंजाब की हिंदी उपन्यास परम्परा : 21वीं सदी के विशेष संदर्भ में — *डॉ. मोनिका घुल्ला* 271

47. Restating Worldviews through Narratives: A Study of Postcolonial Ecology in *The God of Small Things* — *Dr. Manchusha Madhusudhanan* 277

48. The Present Status of Plays Written for Bhaona in Assam : A Study — *Dr. Dulal Hazarika* 283

49. Necessity of Religious Faith : A Critical Analysis of the Select Novels of R. K. Narayan — *Robin C. U., Dr. G. Parvathy* 289

50. Fighting Social Conventions and Prejudices: A Revolutionary Approach in Ashapurna Devi's Trilogy — *Anju PS, Dr. Ramanathan PV* 294

51. Predator-Prey Relationship in the Patriarchal World : A Metaphorical Analysis of Mahesh Dattani's "30 Days in September" — *Alka Jain* 299

52. कुमार कृष्ण की कविता में ग्रामीण संवेदना — *मुकेश कुमार* 307

53. Shared Culture for Cosmopolitan Identity : A Critique of Amit Chaudhuri's *Afternoon Raag* — *Ancy A, V. Virgin Nithya Veena* 314

54. Dreams as Healer and Mentor : A Reading on Tahar Ben Jelloun's *The Sand Child* — *Geethu Vijayan, Dr. B. Sajeetha* 320

55. A Close Reading of the Novel The White Tiger — *Sona Sharma, Mary Raymer* 324

56. कथाकार शांता कुमार के उपन्यास 'वृन्दा' में पर्यावरण : संरक्षण का भारतीय सन्दर्भ — *धर्म चन्द, डॉ. प्रिया शर्मा* 328

57. The Presence of Cultural Conflict in Manju Kapur's Novel Custody — *S. Kanagarasu, Dr. B. Shyamala Devi* 333

58. Cultural Relevance in the English Translation by Dhirendra Nath Bezbaruah of Birendra Kumar Bhattacharya's Novel 'Mrityunjay' — *Dipak Das* 337

59. Chronicling Women as Slum-Subaltern: An Analysis of Mahasweta Devi's *Truth/Untruth* from a Postcolonial Perspective — *Puja Sarmah*, *Dr. Amlanjyoti Sengupta* 344

60. 'Deshi-Videshi' Synthesis : A Study of Diaspora Language in the Novels of the Indian Diaspora — *Shuby Abidi* 350

61. A Journey of Self-Exploration : In the Context of Diasporic Perspective in Nidhi Chanani's Graphic Novel *Pashmina* — *Dhivya A*, *Dr. S. Henry Kishore* 356


## व्यक्तित्व

62. पं. रामाश्रय झा जी के द्वारा भक्ति रस पर रचित बन्दिशों का अवलोकन — *प्रोफेसर सुबास चन्द्र विसोइ*, *राकेश कुमार* 363

63. उस्ताद अल्लादिया खाँ साहब एवं गानतपस्विनी मोगूबाई कुर्डीकर रचित बंदिशें — *डॉ. केशवचैतन्य कुंटे* 368

64. भारतीय संगीत में संतों का योगदान — *प्रा. डॉ. जयश्री विश्राम कुलकर्णी* 374

65. श्रीमद्भागवतीय युगल गीत से प्रेरित सूरदास रचित कृष्ण काव्य — *डा॰ शैलजा मिश्रा* 380

66. Ecological Representation in the Maithili Songs of Vidyapati — *Mallika Tosha*, *Dr. Rajiv Ranjan Dwivedi* 386

67. चित्रपट संगीत में काशी के संगीतकार श्री रामलाल सेहरा — *प्रो॰ शारदा वेलंकर*, *सुधांशु गौतम* 390

68. Use of the Elements of Indian Classical Music in the Compositions of Music Director — *Madan Mohan*, *Anshuman Bhattacharya* 394


## प्रकीर्णक

69. आध्यात्मिक चेतना : विश्व शांति के निर्माण में एक कुंजी — *डॉ. घनश्याम सिंह ठाकुर* 401

70. Cognizance About Sexual Wellbeing Among Adolescent : A Conceptual Outlook — *Dr. Suman Mishra* 406

71. संगीत चिकित्सा द्वारा तनाव प्रबन्धन — *डॉ. सुरेन्द्र नाथ सोरेन* 412

72. संगीत का आधारभूत तत्व-ताल — *डॉ. प्रकाश मिश्रा* 418

73. हिन्दुस्तानी संगीत की विभिन्न शैलियों में महिला कलाकारों का योगदान — *डॉ॰ रश्मि जोशी* 423

74. फिल्म जगत में सूफी संगीत का योगदान — *डा॰ गीता गुप्ता* 426

75. आधुनिक रंगमंच की संगीत परम्परा *डॉ॰ राम किशोर शर्मा* 430

76. Remedy of Anxiety Neurosis by practicing Nadayoga Meditation : A common therapy the through using potentials of Ayurveda, Music & Yoga *Prashant Khare* *Sangeeta Pandit* *K.H.H.V.S.S. Narasimha Murthy* 432

77. चित्रपट संगीत में संगीत निर्देशक की भूमिका *तनु चौधरी* 438

78. भक्ति आन्दोलन में संगीत का समन्वय *प्रो॰ संगीता पण्डित* *कु. अलका* 441

79. धारणा स्वरूप विमर्श : योग सूत्र, विशेष योग-उपनिषद् एवं काश्मीर शैवागमों के संदर्भ में *नवकान्त* 446

80. लोक गाथा में छुपा संस्कृति सुगंध डा. रंजना कुमारी झा 453